

Section-1

Ans ①

जल स्तर घास को परिभाषित: \Rightarrow भूमिगत

जल के प्रमुख स्रोत कुएँ, झरने, झील, अन्तः स्फुटन गैलरियाँ तथा संरन्ध्र गैलरिया है।

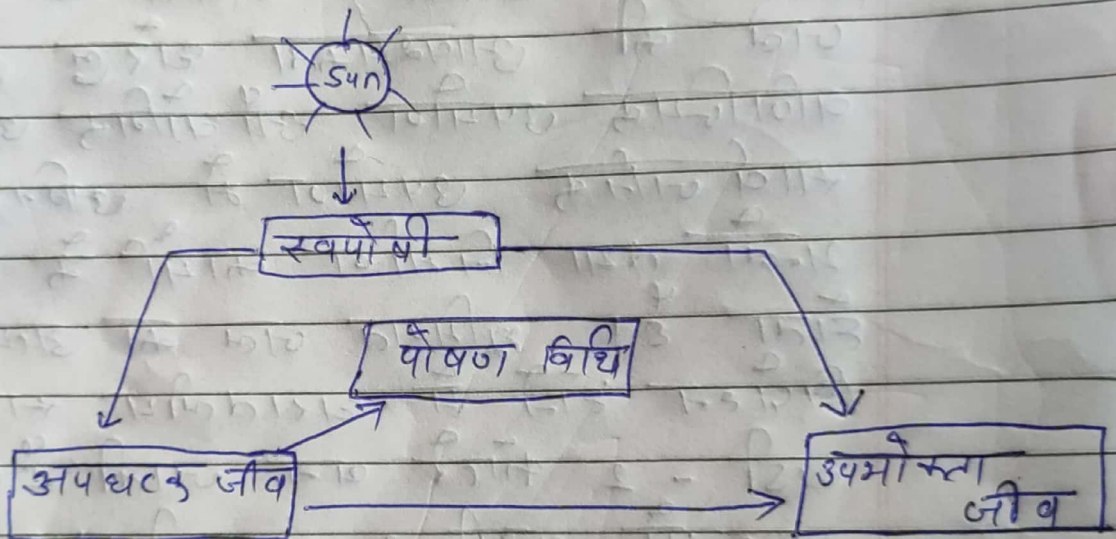
जल स्तर का नीचे होना \Rightarrow शहरीकरण एवं बढ़ती हुई जनसंख्या को जल आपूर्ति व अन्य कार्यों के लिए सतही जल के स्रोतों से जल की आपूर्ति पूरी नहीं हो पाती है। इसलिए आवश्यकता पड़ने हेतु भूमिगत जल को पम्पों की सहायता से भूमि सतह पर लाकर उपयोग में लाया जाता है। नगरों में भूमिगत जल की आवश्यकता घरेलू उपयोग, वाणिज्यिक उपयोग और औद्योगिक उपयोग तथा सार्वजनिक उपयोग में अग्निशामक यंत्रों तथा निर्माण कार्यों के लिए होता है। भूमिगत जल का अत्यधिक विपादन होने से धरातलीय सतह के नीचे बड़ी - 2 कोटरी बन जाती है। जिसकी वजह से कभी - 2 धरातलीय सतह घसक जाती है। इस समस्या का निराकरण करने के लिए (i) सतही संचयन (ii) भूमिगत जल का पुनर्निर्माण सतह संचयन में वर्षा जल को रोक कर बागवानी एवं सिंचारी इत्यादि कामों के लिए अथवा पारकर, तालाब, झील इत्यादि में एकत्रित वर्षा स्तर का उपयोग भी एक कारगर उपाय है।

Section - (2)

Ans ①

परितन्त्र :- जीव सर्वेव समुदाय में रहते हैं तथा समुदाय में प्रत्येक जीव एक दुसरे को प्रभावित करते हैं। साथ ही वातावरण भी अपना प्रभाव जीवों पर डालता है। इस प्रकार जीवों का वातावरण से अटूट सम्बन्ध होता है। समुदाय तथा वातावरण का यह संरचनात्मक तथा क्रियात्मक तन्त्र परितन्त्र या परिस्थितिक तन्त्र कहलाता है।

Ex - पृथ्वी एक पारितन्त्र है।



परिस्थितिक घटक :- परिस्थितिक तन्त्र के आधार पर घटकों को दो भागों में विभाजित किया गया है।

- ① जैविक घटक ② अजैविक घटक

① जैविक घटक - (i) उत्पादक - इसमें हरे पौधे-पौधे आते हैं।

(ii) उपभोक्ता - वे सभी जीव जो अपने भोजन के लिए पौधों पर निर्भर हैं।

① प्राथमिक उपभोक्ता - इसमें शाकाहारी जीव होते हैं, जैसे - भूकरी, खरगोरा

② द्वितीयक उपभोक्ता - इसमें मांसाहारी प्राणी होते हैं, जैसे - शिडिया, टिपकली

③ तृतीयक उपभोक्ता - इसमें मांसहारी प्राणी होते हैं जो छोटी-छोटी प्राणियों को मार कर खाते हैं।

- प्रभाव :-
- ① जनसंख्या घनत्व में वृद्धि
 - ② पक्षी का शिकार
 - ③ प्रदूषण
 - ④ शिक्षा का प्रसार
 - ⑤ सामाजिक सहनशीलता में कमी।

Section - 03

Date / /

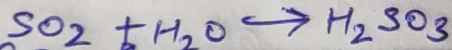
Page No.

अपशिष्ट प्रबंधन :-

~~Section - 03~~

- Ans ①
- (i) रंग :- शुद्ध जल हमें भूरे रंग का होता है। जल प्रदूषित होकर हरे रंग का हो जाता है।
- (ii) पारदर्शिता :- शुद्ध जल पारदर्शी होता है। प्रदूषित जल पारदर्शी नहीं होता है।
- (iii) स्नाग :- अपमार्जन के स्व अन्य पदार्थ जिनका घुलना तनाव जल से कम होता है, स्नाग उत्पन्न करते हैं। इससे जल विषैला हो जाता है।
- (iv) स्वाद एवं गंध :- प्रदूषित जल का स्वाद व गंध अप्रिय होते हैं।
- (v) निलम्बित पदार्थ :- जल निलम्बित पदार्थों का कारण प्रदूषित हो जाता है।

Ans ⑤ अम्ल वर्षा :- अम्लीय वर्षा वायु मण्डल में उत्पन्न कार्बन-डाइऑक्साइड, नाइट्रिक ऑक्साइड तथा सल्फर डाइऑक्साइड गैसों के जल वाष्प से मिलकर रासायनिक अभिक्रियाएं करके कार्बोनिक अम्ल, सल्फ्यूरिक अम्ल तथा नाइट्रिक अम्ल का निर्माण करती है।



वर्षा के दौरान अम्ल जल के साथ मिलकर जल का रूप धारण कर पृथ्वी पर बरसते हैं। जिन क्षेत्रों में यह गैसें अधिक होती हैं। उन क्षेत्रों में अधिक अम्ल बनते हैं।

Ans ④ ओजोन परत क्षय :- ओजोन परत या मण्डल, समताप मण्डल के निचले भाग अथवा परिवर्तन मण्डल के सबसे ऊपर वाले भाग को ओजोन मण्डल कहते हैं। इस भाग को ओजोन मण्डल कहते हैं। इस भाग में 15 से 35 कि०मी० के मध्य ओजोन गैस की एक मोटी परत होती है। जिसे ओजोन परत व ओजोन मण्डल कहते हैं।

प्रदूषण के प्रकार :- प्रदूषण के प्रकार निम्न हैं।

- जल प्रदूषण (2) वायु प्रदूषण
- ध्वनि प्रदूषण (4) रेडियोधर्मी प्रदूषण